Renu Bala al. International Journal of Recent Research Aspects ISSN: 2349-7688, Vol. 2, Issue 1, March 2015, pp. 141-145

मीरा बाई एवं उनकी काव्य प्रवृत्तियाँ

रेणु बाला

हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी कुरुक्षेत्र

सारांश: **मीराबाई भक्तिकालीन सगुणोपासक कृष्ण भक्ति शाखा की एकमात्र कवयित्री है। मीरा ने मध्यकालीन नारी को भक्ति के माध्यम से प्रेम के प्रति अनन्य निष्ठा और अपने आराध्य के प्रति सर्वस्व समर्पण का संदेश दिया। मीरा के संपूर्ण जीवन और काव्य में एक उदात्तए दृढ़व्रतए आत्मचेता व्यक्तित्व की ऊर्ध्वगामी भक्ति.साधना का प्रतिबिंब दिखाई देता है। आत्मोद्धार के लिए उसमें संसार और सांसारिक माया.मोह को तिलांजलि दे दी थी। मीरा की प्रेमभक्ति में नामस्मरणए रूपवर्णनए लीलागान और धाम विषयक आस्था.विश्वास की रूप.रेखाएँ विद्यमान हैं। इन सभी तत्वों के संयोजन से मीरा का ष्भक्तष् रूप बना है। अपने आराध्य के भक्ति.पदों में संयोग.वियोग पक्ष के वर्णन के साथ.साथ कल्पना तत्व और रहस्यवाद का समावेश भी किया है। निश्चय ही मीरा सच्ची तत्वज्ञानी थीए जिसकी परिणति भक्ति में हो गई।**

मुख्य बिन्दु रू **मीराबाई का जीवनवृतए रचनाएंए रहस्वयादए काव्य.प्रवृतियाँए प्रकृति.चित्रणए माधुर्य पद।**

मीरा बाई रू हिन्दी साहित्य की भक्तिकालीन प्रथम कवयित्रीए कृष्णभक्ति शाखा की मधुरतम उपासक मीराबाई थी। उनका अन्तःबाह्य व्यक्तित्व भी पूर्णत एक जीवन्त काव्य था। उनके व्यक्तित्व को हम सुख.दुःख से समन्वित सहजए गंभीर एवं शाश्वत अनुभूति भी कह सकते है। अपने प्रभु श्रीकृष्ण के अनन्य प्रेम के प्रति सर्वस्व समर्पित कर देने वाली और ईश्वर के प्रति दिव्य प्रेम की संदेशवाहक मीरा का जीवन अनेक उतार.चढ़ावों से भरा रहा है। राजस्थान की रक्तरंजित धरती पर सभी विषमताओं से अकेली टक्कर लेने वाली मीरा ने अपने अखंड एवं अजेय व्यक्तित्व से निर्मित अपने प्रवाह में सदियों से सबको रस में सराबोर किया है।

जीवन.वृत्त रू ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर मीराबाई का जन्म 1504 ई॰ ;वि॰सं॰ 1561द्ध में मेड़ता के समीपवर्ती गांव कुड़की में हुआ था। डॉ॰ भाटी मीराबाई की परचीए नामदास की भक्तमाल आदि के माध्यम से यह स्पष्ट संकेत दिया है कि मीरा का जन्म मेड़ता में ही हुआ.

ष्मीरा जनमी मेड़तेए भगति करण कलुकाल।

बिना बजाया बाजीयाए मेहलां सोवन थाल।।ष्1

मीराबाई मेड़ता के रावदूदा के चौथे पुत्र रतन सिंह की पुत्री थी। मीरा का पालन.पोषण मेड़ता में ही हुआ। मेड़ता के रावदूदा ने अपनी पौत्री मीरा की शिक्षा के लिए गुर्जर गौड़ पण्डित गजाधर को नियुक्त किया।2 इन्हीं से मीरा ने पूजा पाठए पुराण तथा धार्मिक बातों का ज्ञान प्राप्त किया।

मीरा ने अपने विवाह का विरोध किया क्योंकि उसने तो बाल्यकाल में ही गोपाल श्रीकृष्ण को अपना पति स्वीकार कर लिया था। फिर भी उस समय राजपूत परिवारों में बाल विवाह परंपरा के अनुसार परिवार की इच्छा से उनका विवाह महाराणा कुंभा के पुत्र राणा सांग के ज्येष्ठ पुत्र कुंवर भोजराज से 1516 ई॰ ;संवत् 1573द्ध में तेरह वर्ष की आयु में हुआ।3 दुर्भाग्यवश संवत् 1584 में कुंवर भोजराज की मृत्यु हो गई तथा वे विधवा हो गई। मीरा के युग में

© 2015 IJRRA All Rights Reserved

सती प्रथा का प्रचलन अपनी चरम सीमा पर था लेकिन मीरा जैसी भक्त शिरोमणि जो प्रभु श्रीकृष्ण को अपनी हर सांस समर्पित कर चुकी थीए को सती होकर अपनी इहलीला समाप्त करने में कोई सार नजर नहीं आया। मीरा अपने पति की मृत्यु के पश्चात् प्रभु श्रीकृष्ण की आराधना के लिए जीवित रही। वह अपना अधिकांश समय पूजापाठ एवं भक्ति में व्यतीत करने लगी। राणा सांगा के उत्तराधिकारी विक्रम सिंह ने मीरा को अनेक यातनाएं दी पर गिरधर गोपाल के प्रति मीरा की भक्ति भावना अविचल रही। विक्रमसिंह ;मीरा का देवरद्ध की यातना एवं सास के क्रूर व्यवहार के कारण मीरा ने चित्तौड़ का परित्याग किया तथा अपने चचेरे भाई जयमल के पास मेड़ता चली गई। किंतु वहाँ हो रहे युद्धों से त्रस्त होकर मीरा वृन्दावन की राह लेती है। फिर वृन्दावन से द्वारिका चली गई। मीरा अपने जीवन के अन्तिम दिनों में द्वारिका रही तथा रणछोड़ जी के मन्दिर में शेष जीवन बिताया। मीरा एक क्षत्रिय बाला थी। जीवन में पीछे मुड़ कर देखना उसने कभी नहीं सीखा। जीवन के इतने सारे कष्ट उसको विचलित न कर सके और अंत में 1546 ई° में ;वि०स० 1603द्ध में उसका परलोक गमन हुआ।4 ष्भवबंधनष् से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने भगवान कृष्ण से प्रार्थना की और उनके मन.प्राण कृष्णमय हो गए। कृष्ण उसकी आँखों में आकर समा गएए पलके खुली की खुली रह गई और मीरा कृष्णमय हो गई।ष्5

इस प्रकार देखा जाए तो मीरा के जीवन वृत्त के पहलुओं से यह तथ्य सामने आते हैं कि अपने युग की एक कर्मठए निडरए साहसी और सहनशील नारी थी। उसके जीवन का मुख्य लक्ष्य अपने प्रियतम श्रीकृष्ण की आराधना करना ही रहा। अपने इसी प्रियतम के प्रति गाढ़ स्नेह के कारण वह जीवन भर अनेक बाधाओं से जूझती रही। उसने न तो सामाजिक आडम्बरों की परवाह कीए न परिवारवादए कुल.मर्यादा और सगे.सम्बन्धियों की। उसकी भक्ति को भंग करने के लिए अनेक प्रत्यन किये गएए पर वह हर हाल में अटूट रही तथा अपना साहस नहीं खोया। उसने मध्यकालीन सामंती समाज में अपनी इच्छानुसार अपने व्यक्तित्व को ढाला और वही कार्य कियाए जो उसे भाया। उसमें सहन करने की अपार शक्ति थी।

काव्य.प्रवृतियाँ रू हिंदी साहित्य का भक्तिकालए हिंदी साहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है। इस युग में एक ऐसी साहित्य धारा प्रचलित हुई जिसने साहित्यरूपी सागर का मन्थन कर मूल्यवान कवि रत्न बाहर निकाले। यहाँ भक्ति की एक शाखा निर्गुण भक्ति शाखा तथा दूसरी सगुणोपासक भक्तिशाखा है। सगुणोपासक भक्ति शाखा रामभक्ति शाखा तथा कृष्णभक्ति शाखा के रूप में विकसित हुई है। भक्तिकालीन कवियों में इसी कृष्णभक्ति शाखा में मीराबाई का नाम आता है। ष्भावात्मक एकता की प्रतीक मीराबाई ने देश की नैतिकता एवं संस्कृति को नया मोड़ दिया। उसका सुंदर निर्मल चरित्रए अनन्य प्रभु प्रेमए अनुपम भक्ति साधना जनजीवन में आदर्श नारीत्व का प्राकट्यए काव्य शक्तिए माधुर्य एवं ज्ञान की अभिव्यक्ति रहा है।ष्6

मीराबाई की रचनाओं में उल्लेखनीय है. ष्नरसी जी का मायराए गीतगोबिन्द टीकाए राग गोबिन्दए राग सोरठए मीरा पदावलीए मीरा की मल्हार आदि। सर्वमान्य मीरा.पदावली ही मीराबाई की कीर्ति का आधार स्तम्भ है। मीरा. पदावली का मूल विषय गिरधर गोपाल का नाम स्मरणए स्तुतिए रूपवर्णनए विनयए सौन्दर्यए कल्पनाए प्रणयानुभूतिए विरहोद्गारए लीलागानए आत्मसमर्पणए ऋतु वर्णन आदि का हदयहारी चित्रण है। मीरा रचित ये पद मीरा के व्यक्तिगत जीवन की विशेषताओं के प्रतिबिंब हैं।

;कद्ध मीरा की माधुर्य भक्ति भावना. माधुर्य भक्ति साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी राजस्थान की अनन्य प्रेम भक्तिन मीराबाई का पद साहित्य अत्यंत भावपूर्ण है। मीरा ने वृन्दावन बिहारी ष्गिरधर नागरष् को रचनाओं में प्रमुख स्थान देकर मीरा ने अपनी मधुराभक्ति की मनोरम व्यंजना की है। मीरा ने स्वयं को कृष्ण की स्वकीया ;पत्नीद्ध मानकर कृष्ण की मधुर प्रेम लीलाओं का रसपान किया है। मीरा द्वारा रचित समग्र पदरचना साहित्य में एकमात्र

माधुर्य भाव ही सर्वापरि है। मीरा पदावली के अन्तर्गत माधुर्य भाव के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का बड़ा ही भावपूर्ण चित्रण है।

संयोग पक्ष. मीरा की रचनाओं में संयोग पक्ष से संबंधित जो पद मिलते हैए वे प्रेम की उस चरमावस्था के द्योतक हैं। लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण का यह रूप मीरा के बाल्यकाल में ही उनके हृदय पटल पर अंकित हो गया था। इसी रूप के प्रति आकृष्ट होकर उसे अपनी आँखों के रास्ते हृदय में लिया था.

ष्बस्याँ म्हारे णेणण माँ नण्दलाल।

मोर मुकुट मकराक्रत कुंडल अरुण तिड़क शोहे माड़।

मोहण मूरत सावरों शूरत णैठां बण्या बिशाड़।

अधर सुधारस मुरड़ी राजाँ उरु बैजण्ता माड़।

मीराँ प्रभु सुखदायी भगत बछड़ गोपाड़।ष्7

मीरा के पदों में संयोग वर्णन में होली के रंगोत्सव की अनुभूतिए वर्षा आगमन पर पिया मिलन की अनुभूति आदि वर्णित है।

वियोग पक्ष . मीरा द्वारा रचित अधिकांश पक्ष उनकी विहरानुभति से ओतप्रोत है। विरह की तीव्र अनुभूति और प्रचुरता के कारण मीरा के पदों में बड़ी मर्मस्पर्शी पीड़ा पाई जाती है। जब वे कहती है कि ष्जणम.जणम रो साथीष तब से उसका पूर्वराग केवल इसी जन्म का ही नहीं जन्म जन्मान्तर की धरोहर बन गया। विरह की विकट स्थिति में मीरा की हालत यह है कि वह अपने रंग महल में बैठकर मोतियों के बदले आँसुओं की माला पिरो रही है.

मैं विरहन बैठी जागूँए जगत सब सोवै री आली।

विरहन बैठी रंग.महल मेंए मोतियन की लड़ पोवै।

इक विरहिन हम ऐसी देखीए अँसुवन की माला पोवै।8

;खद्ध सौन्दर्यानुभूति . मीरा ने अपने पदों में अपने सौन्दर्य के साथ.साथ अपने पिय्रतम गिरधर गोपाल का व्यक्तिपरक सौन्दर्य भी उभारा है। मीरा ने अपने प्रियम के लौकिक रूप के साथ.साथ अलौकिक रुप सौन्दर्य का वर्णन किया है। मीरा ने संसार के सौन्दर्य को क्षणिक और नश्वर बताया है फिर भी वह उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। इसी कारण से उसके दिव्य जीवन चरित के अनेक प्रसंग उसके पदों में लौकिक सौन्दर्य की अनुभूतियों से जुड़ गए हैं.

ष्म्हारो मन हर लीनौ रणछोड़।ष

मोर मुगट सिर छत्र बिराजैए कुंडल री छब ओर।

चरण परवारयाँ रतणाकर रीए धारा गोमत जोर।

धजा पताका तट.तट राजैए झालर री झकझोर।

© 2015 IJRRA All Rights Reserved

भगत जणां रा काज संवारयाए म्हारा प्रभु रणछोर।

मीरा रे प्रभु गिरधर नागरए कर गहयो नंद किसोर।ष्9

;गद्ध प्रकृति.चित्रण रू मीरा की पद रचनाओं में प्रकृति लौकिक धरातल पर उपस्थित हो उनके हृदय के भावों को वाणी देने में सहायभूत हुई है। ज्यादातर प्रकृति का रूप वर्षा ऋतु के आह्लादक वर्णन में ही सिमट कर रह गया है। कुछ पद बारहमासा के रूप में भी मिलते है। इनमें ग्रीष्म आदि ऋतुओं का भी समावेश है। वर्षा के मादक माहौल ने मीरा के हृदय को बार.बार आलोकित किया है।

ष्बरसे री बदरिया सावण रीए सावण री मणभावण

सावण में उमग्यो म्हारो मनड़ोए भणक सुणी हरि आवण री।

उमड़.उमड़ घन मेघा आयाए दामण घणझर लावण री।

बीजा बूंदा मेहा बरसैए सीतल पवण सुहावण री।

मीरा रे प्रभु गिरधर नागरए बेला मंगल गावण री।ष्10

;घद्ध रहस्यात्मकता. लौकिक से अलौकिक सत्ता की ओर उन्मुख होना ही काव्य में रहस्यवाद है। मीरा ने अपनी प्रेमाभक्ति में नवधा भक्ति का भी सुन्दर समावेश किया है। वियोगिनी मीरा की लगन परब्रह्म से लगी है। इसी श्गगन.मण्डलश् में रहने वाले अपने प्रियतम की सेज का वर्णन करती हुई मीरा कहती है .

ष्सूली ऊपर सेज हमारीए किस विध सोणा होय।

गगन मण्डल पे सेज पिया कीए किस विध मिलवा होय।ष्11

;डद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण. मीरा रचित साहित्य ने भारतीय जन.मन को ही नहींए बल्कि पूरे विश्व के भक्त हृदयों को अविभूत किया है। मीरा का दुःख सर्वथा उसका अपना होते हुए भी मानव मात्र का है। उसकी वेदना जीवमात्र की वेदना है।

ष्हरि तुम हरो जन की पीर।

द्रौपदी की लाज राखीए तुरंत बढ़ायो चीर।ष्12

;चद्ध कल्पना शक्ति. कल्पना शक्ति मीरा की पद रचना का आधार है। उसके मनोजगत् एवं भावजगत् पर उस अलौकिक पुरुष से प्रतिपल होने की कल्पना है। उसकी चेतना को सींचती रहती है और उसी के बलबूते वह अपने जीवनपथ पर अविरत गति से चलती रहती है। प्रियतम से मिलने की कल्पना ही उसके जीवन की सबसे बड़ी धरोहर है.

ष्म्हां गिरधर रंग राती।

पंचरंग चोला पहेरया सखी म्हांए झरमट खेलण जाती।

बा झरमट मां मिल्यो सांवरोए देख्या तन.मन राती।

© 2015 IJRRA All Rights Reserved

जिवरो पिया परदेश बसैरी लिख.लिख भेजै पाती।

म्हारा पिया म्हारे हिवड़े बसतांए ना आवां ना जाती।

मीरा रे प्रभु गिरधर नागरए मग जोवां दिन राती।ष्13

इनके अतिरिक्त मीरा के काव्य में प्रणय.प्रभाव वेदना एवं करूणा का समावेश भी है। जहाँ इनके काव्य में नारी के प्रति उदात्त तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण दिखाई दिया वहाँ दूसरी ओर राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक प्रेम की व्यंजना भी दिखी।

इस प्रकार मीरा की रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक सर्वत्र दिखाई देती है। मीरा की रचना मूलतः भाव पक्ष पर आधारित हैं मीरा की भक्ति हृदय की हैए ज्ञान की नहीं। मीरा की भक्ति न किसी सम्प्रदाय से सम्बन्धित है और न ही किसी भी प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक बंधनों को स्वीकार करती है। मीरा की भक्ति का एकमात्र लक्ष्य अपने साँवरिया की प्राप्ति था। ईश्वर का आंतरिक स्पर्श पाए बिना ऐसी अलौकिक रचना नहीं हो सकती।

संदर्भ सूची

1ण मीरा व्यक्तित्व और कृतित्वए पृ0. 22

2ण वहीए पृ°. 24

3ण वहीए पृ°. 25

4ण मीरा का काव्यए डॉ° भगवानदास तिवारीए पृ°. 41

5ण वहीए पृ°. 41

6ण मीरा व्यक्तित्व और कृतित्वए ष्मीरा के प्रभु गिरधर गोपालष् श्री देवेन्द्र सिंह शक्तावतए पृ° 135

7ण मीराबाई की पदावलीए पृ°. 46

8ण वहीए पृ°. 51

9ण मीरा पदमालाए स°. डॉ° आशुतोष गुप्तए पृ°. 64

10ण वहीए पद. 49ए पृ° 49

11ण वहीए

12ण वैचारिकी त्रैमासिक. मीरा क्रांतिधर्मी चेतना. अक्तूबर.दिसम्बर. 2000ए अंक 4ए पृ0. 39

13ण मीरा पदमालाए सं° आशुतोष गुप्तए पद. 10ए पृ° 10

© 2015 IJRRA All Rights Reserved